



JHALAWAR JILE KI KAMKAGI MAHILAO KI PARIWARIK VATAVARAN KA SAMAYOJAN PAR PADHNE WALE PRABHAV KA ADHYAN

झालावाड़ जिले की कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक वातावरण का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Dr. Madhu Kumar Bharadwaj¹, Mamta Rathor²

²Researcher (Education), Career Point University, Kota (Raj.), India.

ABSTRACT

पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत भौतिक पक्ष, पारिवारिक सदस्य के व्यक्तित्व एवं विवास आदि अनेक कारक सम्मिलित होते हैं जो कामकाजी महिलाओं के समायोजन पर प्रभाव डालते हैं। यदि कामकाजी महिलाओं का पारिवारिक वातावरण उच्च रहेगा तो कामकाजी महिलाओं के समायोजन में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। विभिन्न शिक्षण संस्थान में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं के हल हेतु तकनीकी सुविधाओं का समावेश हो सकेगा।

प्रस्तुत भोध पत्र इस समस्या पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है एवं कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव की तहत तक जाने की कोशिश है।

1. प्रस्तावना :

झालावाड़ राजस्थान राज्य के दक्षिण पूर्व में स्थित झालावाड़ जिला का मुख्यालय है यह झालावाड़ के क्षेत्र का हिस्सा है। झालावाड़ के अलावा कोटा बारां एवं बूंदी हाड़ौती क्षेत्र में आते हैं। झालावाड़ मालवा के पठार पर बसा एक जनपद है।

बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, भौक्षिक और सामाजिक रूप से सतकृत किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है इसके बावजूद अगर कुछ नहीं बदलता तो वह है महिलाओं की घरेलु जिम्मेदारी, खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी महिलाओं का हि काम माना जाता है यानी उन महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है घरेलु महिलाओं कि तुलना में कामकाजी महिलाओं पर काम का बोझ ज्यादा है इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर दोनों को संभालने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है घर और ऑफिस के बीच सामंजस्य बिठाना मुश्किल होता है।

प्रोफेसर अर्चना सिंह कहती है कि कामकाजी महिलाओं की स्थिति दोनों में सवार व्यक्ति के समान होती है क्योंकि एक और उसे ऑक्जुपेशनल स्ट्रेस या कामकाज का तनाव झेलना पड़ता है तो दूसरी और उसे घरेलु मोर्चे पर भी परिवार को खुश रखने की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है।

महिलाओं के कार्यकारी होने से उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है उन्हें दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है जिससे वे अपने बालकों की देखभाल करने का समय नहीं निकाल पाती। कार्यकारी महिलाएं चाहते हुए भी अपने बच्चों की उपेक्षा करने के लिए विवश हैं। कार्यकारी महिलाओं के बालकों में माता पिता के प्रति आस्था तथा निष्ठा कम पाई जाती है कार्यकारी महिलाओं के कार्यक्षेत्र से उनके घरेलु वातावरण में भी अन्तर आया है क्योंकि घर के वातावरण को श्रेष्ठ बनाये रखने में सर्वाधिक श्रेय माँ का होता है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसके हर उद्देश्य के पीछे कुछ उद्देश्य होता है इस अध्ययन के भी कुछ उद्देश्य का निर्धारण किया गया है परन्तु इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन है।

आज नारी हर क्षेत्र में कार्यशील है आज वे सफल अध्यापिका, प्रधानाध्यापिका, डॉक्टर, अभियन्ता, अधिवक्ता, नर्स, समाजसेविका,

विमान परिचारिका, टेलिफोन ऑपरेटर, लिपिक, जिलाधिकारी, संगीत के क्षेत्र में कार्यरत हैं। कामकाजी नारी को दोहरे दायित्व निभाते हुए जीवन में संघर्ष करना पड़ता है कभी कभी घर के दायित्व से भी कार्यक्षेत्रीय दायित्व महत्वपूर्ण होते हैं तब पति का कर्तव्य होता है कि पत्नी को समझना, उसके कार्य में मदद करना व उसे प्रोत्साहन देना। कार्यक्षेत्र में थक कर आई पत्नी को पति की दो मीठी बातें ही स्वर्ग का सुख देती हैं।

घर और ऑफिस कि जिम्मेदारी के कारण महिलाएं तनाव ग्रस्त हो जाती हैं। इसकी मुख्य वजह है महिलाओं पर घर और बाहर की जिम्मेदारियों का होना जिसकी वजह से वे बहुत तनाव व मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। परिवार व ऑफिस के कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निभाने की कोशिश करती हैं इसकी वजह से भी महिलाएं मानसिक रूप से परेशान रहती हैं। अतः एक कामकाजी महिलाओं को सफलतापूर्वक कार्यकरने के लिए पारिवारिक वातावरण का सहयोग आवश्यक होता है। और उसके मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तभी वह आगे बढ़ सकेगी। वह समाज में स्वयं का और परिवार का स्थान बना सकेगी। इससे उसके परिवार की भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, सम्मान बढ़ेगा।

शिक्षा के कारण ही नारी सतकृत व आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास कर सकती है। कामकाजी महिला घर व कार्यक्षेत्र को सुचारु रूप से कार्य करना चाहती है। इससे उनके पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य समायोजन तथा व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव पड़ता है और कार्यकारी महिलाओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी बढ़ जाती है वह उच्च से उच्च पद को पाना चाहती है जिससे कार्यकारी महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है और व्यावसायिक आकांक्षा भी धीरे धीरे बढ़ती रहती है। उनका पारिवारिक वातावरण में समायोजन करना भी कठिन हो जाता है कामकाजी महिलाएं जिम्मेदारियों के प्रति समायोजन करके अपने कर्तव्य का निर्वाहन करती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता :

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है प्राचीन काल में भारत में महिला का सम्मान अत्यन्त गौरवपूर्ण माना जाता था। देश धन धान्य से पूर्ण था और भौर्यपराक्रम अद्वितीय था भारत में अपार धन सम्पदा इसलिए थी कि देश ज्ञान विज्ञान एवं महिला सम्पदा से संतुष्ट था। भारत का वैभव

महिला शिक्षा के कारण था। जिस देश में महिला की तरक्की नहीं होती है उस देश की तरक्की भी रुक जाती है। आज महिला शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है जिससे की वह राष्ट्र विकास में भागीदारी बन सके। आज की महिला अनेक परिस्थितियों से घिरी हुई है। उसकी आवश्यकताएँ इस भौतिक युग में अनंत है वह अपने साधनों के द्वारा इन आवश्यकता की पूर्ति में लगी रहती है परन्तु यह जटिल प्रश्न है कि क्या आज महिला अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है जिसको वह प्राप्त करना चाहती है? आज सामाजिक अव्यवस्था को देखते हुए असम्भव प्रतीत होता है फिर भी महिला समय के अनुसार अपने विवेक एवं बुद्धि से आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है और स्वयं का समायोजन स्थापित करती रहती है।

आज की भाताब्दी मानव के विकास में अपना अनुठा स्थान रखती है। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज महिला व्यवहार की प्रक्रिया, इसकी रुचि कार्यकुशलता उपलब्धि स्तर व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर महिला का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज महिला की उपलब्धि अर्जन क्षमता एवं महिला के पारिवारिक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृत्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। महिला का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब महिला का पारिवारिक वातावरण सकारात्मक हो जिससे महिला सही दिशा में समायोजित हो सके और जीवन को सही दिशा प्रदान कर सके उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भोधाकर्ती ने झालावाड़ जिले की सरकारी एवं गैर सरकारी (विभिन्न शिक्षण संस्थान की) कामकाजी महिला के पारिवारिक वातावरण का समायोजन पर प्रभाव के अध्ययन को आधार बनाया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :

1. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के

समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

पारिवारिक वातावरण : पारिवारिक वातावरण व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ है वह उसका वातावरण है। इसमें वे सभी तत्व सम्मिलित हैं जो मानव के जीवन और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

समायोजन : लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सामंजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है यहाँ समायोजन से तात्पर्य कामकाजी महिलाओं के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में समायोजन से है।

कामकाजी महिला : काम अर्थात् कर्म, कार्य, धंधा, इच्छा, कामना, नौकरी, रोजगार आदि।

‘काजी’ अर्थात् काम में लगा रहने वाला उद्यमी। अतः कामकाजी महिला अर्थात् आज दफ्तरों, घरों, अस्मतालों, विद्यालयों, बैंकों में आदि औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत अर्धशिक्षित अथवा सुशिक्षित महिलाओं को कामकाजी महिला कहा जाता है।

न्यादर्श : प्रस्तुत भोध अध्ययन में झालावाड़ जिले की सरकारी एवं गैर सरकारी विभिन्न भौक्षिक संस्थानों से कुल 200 कामकाजी महिलाओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें झालावाड़ एवं झालापाटन से सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय से क्रमशः 100-100 कामकाजी महिलाओं को लिया गया है।

अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ बीना भाह द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी एवं डॉ एस के मंगल द्वारा निर्मित समायोजन सूची को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी : प्रस्तुत भोध अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के संदर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, सह सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना संख्या 1 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी

तालिका – 4.3

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रान्तिक मान (Cr)	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	100	144.86	7.28	0.64	0.05 स्तर पर सार्थक
2.	गैर-सरकारी विद्यालय	100	143.89	13.02		

(df=200-2=198)

0.05 सार्थकता स्तर = 0.087, 0.01 सार्थकता स्तर = 0.114

महिलाओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपरोक्त तालिका संख्या 4.1 में सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण से सम्बन्धित आकड़ों का मध्यमान क्रमशः 144.86 व 143.89 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.28 व 13.02 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर टी-मूल्य (t) 0.64 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.05 वि वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.97 से कम है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि

“सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं है।” परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका – 4.2

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रान्तिक मान (Cr)	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	100	56.67	4.93	1.82	0.05 स्तर पर सार्थक
2.	गैर-सरकारी विद्यालय	100	55.43	4.69		
(Df= 100 + 100 – 2 = 198)					0.01 स्तर (t) =2.60, 0.05 स्तर (t) = 1.97	

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपरोक्त तालिका संख्या 4.2 में सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों की कामकाजी महिलाओं के समायोजन से सम्बन्धित आकड़ों का मध्यमान क्रमशः 56.67 व 55.43 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.93 व 4.69 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर टी-मूल्य (t) 1.82 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये

गये मान 1.97 से कम है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि “सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों की कामकाजी महिलाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।” अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 3. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।

तालिका – 4.3

क्र.सं.	चर (Variable)	न्यादर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	सह-सम्बन्ध गुणांक (C)	सार्थकता स्तर
1.	पारिवारिक वातावरण	200	144.37	+0.20	0.05 स्तर पर सार्थक
2.	समायोजन		56.05		
(df=200 - 2 = 198)			0-05 सार्थकता स्तर = 0.087, 0.01 सार्थकता स्तर = 0.114		

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपरोक्त तालिका संख्या 4.3 सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य सह-सम्बन्ध से सम्बन्धित है। तालिका से प्रदर्शित होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिला के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 144.37 एवं 56.05 प्राप्त हुए। चरों के मध्य सह-सम्बन्ध की गणना करने पर सह-सम्बन्ध गुणांक (r) 0.20 प्राप्त हुआ। जिससे ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध है। पियर्सन सह-सम्बन्ध सार्थकता तालिका के अनुसार प्राप्त सह-सम्बन्ध गुणांक 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये तालिका मान से अधिक है। अतः परिकल्पना “सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं होता है” अस्वीकृत होती है। अतः दोनों चरों में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है।

निष्कर्ष :

- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाएँ समायोजित पायी गयी हैं।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया अर्थात् कामकाजी महिला का पारिवारिक वातावरण उच्च होने पर उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1963): शिक्षा में भोध, प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0, नई दिल्ली
- मंगल, एस. के. (1996): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।
- कपिल, एच. के. (2004): “अनुसंधान विधियाँ”, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन आगरा।
- रिजवी (2010): “ए स्टडी ऑफ प्रौद्योगिकी एडजस्टमेंट ऑफ टीचर्स ऑफ वैरियस एज ग्रुप्स”
- भार्मा एवं गुप्ता (2011): “ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट प्रोब्लम्स ऑफ सैकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स ऑफ कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट इन रिलेशन टू देयर सेक्स एण्ड लोकल”
- गारिया (2012): “इफेक्ट ऑफ पेरेंट्स बिहेवियर आन द एडजस्टमेंट स्टेटस ऑफ स्टूडेंट्स”